

सिद्धान्तसारावलिः

त्रिलोचनशिवाचार्यविरचिता

अन्वयार्थाविस्तरार्थाभिधभाषाव्याख्याद्वयसहिता

अन्वयार्थाकारः

सद्धर्म-उज्जयिनीपीठाधीश्वर-श्री १००८ जगद्गुरु-
मरुलसिद्धशिवाचार्यमहास्वामिनः

विस्तरार्थाकारः सम्पादकश्च

राष्ट्रियपण्डित-श्रीब्रजवल्लभद्विवेदः

शैवभारती-शोधप्रतिष्ठान-निदेशकः

प्रकाशकः

शैवभारती-शोधप्रतिष्ठानम्

जंगमवाड़ीमठ, वाराणसी - २२१ ००१

विषयसूची

शुभाशीर्वचन

1-11

प्रस्तावना

1-82

सामान्य परिचय — पृ. १, ग्रन्थ-सम्पादन — ४, मूल ग्रन्थ एवं टीका — ५, ग्रन्थकार त्रिलोचन शिवाचार्य — ६, टीकाकार अनन्तराम्भु — ६, टीका में उद्धृत ग्रन्थ-ग्रन्थकार — ७ ; ज्ञानपाद, निष्कल प्रासाद मन्त्र — १४, पदार्थत्रय, पति — १८, पशु — २२, विज्ञानाकल — २३, प्रलयाकल — २५, सकल — २६, पाश, मल — २८, रोधशक्ति — ३०, कर्म — ३१, माया — ३२, बिन्दु (महामाया) — ३३, शुद्धाध्वा — ३४, मिश्राध्वा — ३५, अशुद्धाध्वा — ३७, नाद-बिन्दु-लिपि — ४०, कुण्डलिनी शक्ति — ४१, पंचकृत्यकारी शिव — ४३, सृष्टि — ४३, संहार — ४४, अनुग्रह — ४४ ; क्रियापाद, मल-परिपाक, कर्मसाम्य एवं शक्तिपात — ४५, दीक्षा — ४८, दीक्षा-संस्कार किसका ? — ५०, समयाचार-पालन — ५१, दीक्षा-विधान — ५३, कारणेश्वर-त्याग — ५३, दीक्षित व्यक्ति की चर्या — ५७, आन्तर और बाह्य पूजा — ५८, जप-निवेदन — ५९, अग्निकार्य — ६०, दीक्षार्य मण्डप, कुण्ड, मण्डल का विधान — ६१, दीक्षा-संस्कार — ६२, पूर्णाहुति — ६४, अभिषेक — ६४, दीक्षा का अधिकार — ६५, शैवकुल परम्परा — ६५, आमर्दक मठ परिचय — ६६ ; योगपाद, नाडी चक्र — ६७, आधारदशक — ६७, प्राणायाम द्वारा नाडी-शुद्धि एवं वायु-जय — ६८, पाँच अवस्थाएँ — ६९ ; चर्यापाद, अट्ठाईस शैवागम — ७०, पवित्रोत्सव — ७२, भोजनविधि एवं प्रायश्चित्त — ७२, अन्त्येष्टि-विधान — ७३, प्रतिष्ठा-विधान — ७३, वास्तुपूजा — ७५, त्रितत्त्व, पंचमूर्ति एवं अष्टमूर्तिन्यास — ७५, चिह्नांकन एवं तत्त्वव्याप्ति — ७७, फलश्रुति — ७८, ग्रन्थसमाप्ति — ७८, खीरशैव मत — ७९, बौद्ध मत — ८०, युगों की स्थिति — ८१, आधार प्रदर्शन — ८२ ;

विषयसूची

83-96

ज्ञानपाद

परशिव नमस्काररूप मङ्गल श्लोक

१-७

जगत्त्रिमाण में परशिव (पति) की निमित्तकारणता

२-३

स्वावर-जंगमात्मक जगत्

३

शुद्ध-अशुद्ध तत्त्व एवं भुवन	३
शिवतत्त्व और बिन्दुतत्त्व	३-४
शुद्ध और अशुद्ध सृष्टि में क्रमशः बिन्दु (महामाया) और माया की उपादानकारणता	४
विज्ञानाकल, प्रलयाकल और सकल नामक त्रिविध जीव	४
आणव, मायीय तथा कर्म मल (पाश)	४
मन्त्र और मन्त्रेश्वर (अनन्त आदि आठ विघ्नेश्वर)	४
मल, माया, कर्म, बिन्दु और रोधशक्ति नामक पाँच पाश	४
शक्तिपात एवं मुक्तावस्था	४-५
प्रासाद मन्त्र का पंचविध उच्चारण	५
षड्विध कारणेश्वरों का त्याग	५
मुण्डक-वचन की आगमपरक व्याख्या	५
कारणेश्वरों के त्याग की दूसरी पद्धति	६
इस पूरी सृष्टि का प्रकाश परमशिव से	६
प्रासाद मन्त्र के अभ्यास से निष्कल शिव का साक्षात्कार	६-७
पराशक्ति से सम्पन्न परशिव का नाना रूप धारण करना	७-१०
शिव की स्वयंप्रकाशता	८
बिन्दु की स्थिति	८-९
षड्विध ब्रह्म	९
सादाख्य तत्त्व (सदाशिव)	९
शुद्ध, शुद्धाशुद्ध और अशुद्ध सृष्टि के कर्ता	९-१०
शिव और शक्ति का धर्मधर्मिभाव संबन्ध	१०-११
अनाहत शिव	१०
तत्त्व, मूर्ति और भाव (शिव, सदाशिव और सादाख्य)	११
शक्ति का स्वरूप एवं भेद	११-१४
सर्विकल्पक ज्ञान एवं शिव की भोग और अधिकार अवस्था	११
निर्विकल्पक ज्ञान एवं शिव की लयावस्था	११
संकल्परूपा एवं करणरूपा द्विविध क्रिया	११
शक्ति का स्वरूप	१२-१३
वामा आदि नानाविध शक्तियाँ	१३
अष्टमूर्ति शिव	१३
पक्वमल और अपक्वमल विज्ञानाकल जीव	१३
तिरोधान एवं अनुग्रह व्यापार	१३
सकल जीव की सोलह कलाएँ	१३-१४

पुन्यष्टक देह (सूक्ष्म शरीर)	१४
प्रलयाकल जीव	१४
आत्म(पशु) तत्त्व और उसके त्रिविध भेद	१५-१८
जीवात्मा (पशु) का सामान्य लक्षण	१५-१६
जीवात्मा के त्रिविध भेद	१६-१७
मल शब्द के पर्याय	१७
मलपाक	१७-१८
अधिकार पद या सामुज्य लाभ	१८
आणव मल एवं रोधशक्ति (पाश) का स्वरूप	१९-२२
पशु शब्द के पर्याय	१९
मल (अज्ञान) का स्वरूप और प्रयोजन	१९-२२
तिरोधान और अनुग्रह व्यापार	२२
अनुग्रह शक्ति में पाश पद का औपचारिक प्रयोग	२२
कार्य नामक पाश का स्वरूप	२२-२५
प्राणियों में इन्द्रियों और विषयों का वैशिष्ट्य	२३-२४
कर्म नामक पाश का स्वरूप एवं कृत्य	२४-२५
कर्मसाम्य, शक्तिपात एवं शिवत्व की अभिव्यक्ति	२५
मायीय एवं बैन्दव पाश का स्वरूप	२५-२८
माया का स्वरूप एवं कृत्य	२६-२८
बिन्दु (महामाया) का स्वरूप एवं कृत्य (पाँच कलाएँ)	२८
पाँच शुद्ध तत्त्वों का स्वरूप	२८-३१
बिन्दु और शिव की तीन अवस्थाएँ (सय, भोग और अधिकार)	२९-३१
इकतीस अशुद्ध तत्त्वों का निरूपण	३१-३४
शुद्धाशुद्ध एवं अशुद्ध तत्त्वों की प्रवृत्ति	३२-३३
सात ग्रन्थियाँ एवं पुरुष तत्त्व	३३
राग तत्त्व में विद्यमान रुद्र	३३-३४
विज्ञानाकलों एवं प्रलयाकलों की ईश्वर एवं शुद्धविद्या के भुवनों में अधिकार-प्राप्ति	३५-३८
सदाशिव पदवाच्य शिव का स्वरूप	३५-३६
माया और शुद्धविद्या के अन्तर्गत में विज्ञानाकलों की स्थिति	३६-३७
अधिकारप्राप्त विज्ञानाकल (मन्त्र एवं मन्त्रेश्वर)	३७
अष्टादशोत्तर शतरुद्र	३७-३८

कुण्डलिनी (बिन्दु) शक्ति एवं कला तत्त्व का स्वरूप	३८-४४
नाद, बिन्दु और लिपि का स्वरूप एवं इनके भेद	३९-४०
वाणी के परा आदि चतुर्विध भेद	४०
वर्णों की उत्पत्ति के आठ स्थान	४०
नाद से स्थावरजंगमात्मक जगत् की सृष्टि	४१
नाद और बिन्दु की कलाएँ	४१-४२
कुण्डलिनी शक्ति	४२-४४
अणु (जीवात्मा) की कर्तृशक्ति	४४
विद्या तत्त्व और राग तत्त्व का स्वरूप	४४-४७
विद्या तत्त्व की बुद्धि तत्त्व से भिन्नता	४५-४७
काल और नियति तत्त्व का स्वरूप	४७-४८
पंचकंचुक से आवृत पुरुष तत्त्व का एवं प्रकृति तत्त्व का स्वरूप	४८-५०
गुण तत्त्व एवं बुद्धि तत्त्व का स्वरूप	५०-५२
बुद्धिगत भावों और प्रत्ययों का स्वरूप एवं उनके भेद	५२
अहंकार तत्त्व एवं मनस्तत्त्व का स्वरूप	५२-५६
अहंकार की वृत्तियाँ एवं त्रिविध सृष्टि	५३
पंचविध प्राण की वृत्तियाँ	५३-५५
पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ एवं पाँच कर्मेन्द्रियाँ	५६-५७
पाँच तन्मात्राएँ एवं पाँच महाभूत	५७-५९
शब्द आदि गुणविषयक न्याय-वैशेषिक मत की समालोचना	५८
तत्त्वों के शुद्ध, शुद्धाशुद्ध एवं अशुद्ध नामक तीन प्रकार	५९-६१
अधिकार, भोग और लय नामक तीन अवस्थाएँ	६०
तत्त्व का लक्षण	६०-६१
पृथिवी से लेकर शिव पर्यन्त तत्त्वों का परिमाण	६१-६३
भगवान् शिव का प्रत्येक आत्मा को भोगप्रदान	६३-६४
भगवान् के संरक्षण (स्थिति) और लय (संहार) कृत्यों का स्वरूप	६४-६५
अवान्तर प्रलय और महासंहार का स्वरूप	६६-६८
मानुष और दैव वर्ष, युग आदि का स्वरूप	६६-६८
एक से लेकर परार्ध पर्यन्त संख्या	६८-६९

शिव के अनुग्रह कृत्य का स्वरूप	६९-७०
संहार काल में शतरुद्र आदि की स्थिति	७०
जीवों के भोग और मोक्ष संपादन-हेतु शिव की पंचकृत्यकारिता	७०-७२
महाप्रलय का प्रयोजन	७१-७२
महासंहार काल में भी शिव, जीव और माया की स्थिति	७२

क्रियापाद

मलपरिपाक, शक्तिपात, दीक्षा एवं समयाचार का पालन	७३-७७
कर्मसाम्य एवं शक्तिपात का स्वरूप	७४
शब्दों का गौण (औपचारिक) प्रयोग	७४
शक्तिपात का प्रयोजन एवं उसके चिह्न	७४-७५
गुरुवर (सद्गुरु) के लक्षण	७५-७६
दीक्षा के द्वारा शिष्य के पाशों का छेदन	७६
समयी, पुत्रक और साधक द्वारा पालनीय समयाचार	७६-७७
नित्य, नैमित्तिक और काम्य कर्म	७७
समयाचार-पालक को शरीरपात के बाद शिवपद की प्राप्ति	७७-८२
शैव समयाचार-पालन की विशेष मान्यता	७८-७९
समयाचार का लोप होने पर प्रायश्चित्त का विधान	७९
दीक्षित व्यक्ति के उत्क्रान्तिकालीन कर्तव्य	८०
अन्त्येष्टिकालीन प्रायश्चित्त	८१
षाड्गुण्य की अभिव्यक्ति एवं शिवसमता	८१-८२
मुक्तात्मा और शिव की भिन्नता	८२
विज्ञानाकल और प्रलयाकल के लिये दीक्षाविधान	८३-८४
विज्ञानाकल में कर्मसाम्य की उपपत्ति	८३-८४
चतुर्विध शक्तिपात	८४
शक्तिपात के चिह्नों के अनुसार दीक्षाविधान	८४-८७
मुक्त जीव को शिवभाव की प्राप्ति	८७
समयाचारों का लोप होने पर प्रायश्चित्त का विधान	८७-८८
चर्मा शब्द का अर्थ	८८
समयाचार के उल्लंघन से पिशाचयोनि की प्राप्ति	८८
शिव द्वारा स्कन्द गुरु को उपदिष्ट नवकल प्रासाद मन्त्र	८९-९२

सदाशिव आदि सात गुरु	९०
प्रासाद पद की व्युत्पत्ति और प्रासाद मन्त्र का स्वरूप	९०-९२
बारह और सोलह कलाओं वाला प्रासाद मन्त्र	९२-९५
हकार के पर्याय नाम	९३
बारह और सोलह कलाओं का विवरण	९३-९४
कलाओं के उच्चारण के विषय में शंका-समाधान	९४-९५
प्रासाद मन्त्र की मात्रासंख्या एवं षड्विध शून्य	९५-९८
नादात्मक हंस मन्त्र में षड्विध शून्यों की स्थिति	९६-९८
द्वादशकल प्रासाद मन्त्र का प्रस्तार एवं ध्यानक्रम	९८-९९
प्रासाद मन्त्र की कलाओं का आकार	९८-९९
प्रासाद मन्त्र में कलाओं की स्थिति, षडध्वव्याप्ति एवं कारणेश्वर	९९-१००
प्रासाद मन्त्र की कलाओं की कान्ति	१००-१०३
प्रासाद मन्त्र से पंचब्रह्म, षडंग आदि मन्त्रों की उत्पत्ति	१०१-१०२
अष्टसिद्धिप्रद अष्टविध प्रासाद मन्त्र	१०२
प्रासाद मन्त्र की प्रयोगविधि	१०२-१०३
प्रासाद मन्त्र के जप से शिवपद की प्राप्ति	१०३-११०
प्रणव पद के पर्याय और षडक्षर मन्त्र	१०३-१०४
प्रासाद आदि मन्त्रों की जपविधि	१०४-१०५
कारणेश्वरत्याग विषयक शंका-समाधान एवं क्रम	१०५-१०७
मन्त्रपद की व्युत्पत्ति	१०७-१०८
जलाभिषेक (स्नान) का विधान	१०८
चिच्छक्ति का विकास	१०८
पाँच अंग वाला प्रासाद मन्त्र	१०९
निष्कल प्रासाद मन्त्र	११०
शाक्त क्षोभ से उत्पन्न अमृत-प्रवाह में मानस स्नान	११०-११२
स्नान के भेद और मानस स्नान की विधि	१११-११२
भूतशुद्धि के समय शरीर की अस्थि वृक्ष के रूप में भावना	११२-११४
शोषण, दाहन और आप्यायन के द्वारा शरीर की शुद्धि के उपरान्त देवपूजा	११४-११७
त्रिविध प्राणायाम और मात्राकाल का निरूपण	११५-११६
अमूर्त आकाश की भावना का प्रकार	११७

पंचब्रह्म मन्त्र की अद्वितीय कलाएँ एवं सायक के शरीर में इन कलाओं के न्यास के स्थान	११७-१२०
आन्तर और बाह्य शिवपूजा का विधान	१२०-१२३
बाह्य और आभ्यन्तर पूजा	१२१
आभ्यन्तर पूजा की दो विधियाँ	१२१-१२३
भाव पद का अर्थ, अहिंसा आदि अष्टविध पुष्प	१२३
नाभिकुण्ड स्थित शिवाग्नि में आहुतिदान	१२३-१२५
बाह्य पूजा के क्रम में लिंगपूजा की श्रेष्ठता	१२५-१२८
आसन-परिकल्पन एवं षडध्वन्यास की विधि	१२६-१२८
आवाहन का प्रकार	१२८-१३०
भगवान् के आवाहन का उत्कृष्ट क्रम	१२९-१३०
आवाहन, स्थापन आदि दस संस्कार	१३०-१३३
आवाहनविषयक शंका-समाधान	१३१
आवाहन के दो प्रकार	१३२
मुद्रा पद की निरुक्ति एवं विभिन्न मुद्राओं के लक्षण	१३२-१३३
पंचोपचारों का स्वरूप	१३३-१३५
शिवमन्त्र के जप की भावना का क्रम	१३५-१३७
त्रिविध जप, जपविधि एवं जपमाला (अक्षसूत्र)	१३५-१३७
अग्निकार्य (हवन) की विधि	१३७-१४६
कुण्ड की शुद्धि के अठारह संस्कार	१३८-१३९
अक्षपाट संस्कारविषयक शंका-समाधान	१३९-१४०
अरणिज आदि वह्नियों में से किसी एक की कुण्ड में स्थापना	१४०-१४१
कुण्ड में स्थापित शिवाग्नि के गर्भाधान आदि संस्कार	१४१
शिवाग्नि की शिव के पंचवक्त्रों से अभिन्नता	१४१-१४३
विभिन्न वक्त्रों में कामना-भेद से आहुतिदान	१४४
घृत के अठारह प्रकार के संस्कार	१४५
सुक् में शक्ति और सुवा में शिव का न्यास	१४५
पूर्णाहुति का क्रम	१४६
काम्य होम का विधान	१४६-१४७
विभिन्न दीक्षाओं का स्वरूप एवं फल	१४७-१५४

दीक्षा पद की व्युत्पत्ति तथा क्रिया दीक्षा का लक्षण	१४८-१४९
भौतिकी और नैष्ठिकी दीक्षा एवं उनके भेदोपभेद	१४९
शिवधर्मिणी एवं लोकधर्मिणी दीक्षा	१५०-१५१
सबीजा और निर्बीजा दीक्षा एवं उनके भेद	१५१-१५२
निराधारा और साधारा दीक्षा	१५२-१५३
दीक्षा-संस्कार विषयक प्रश्न एवं समाधान	१५३-१५४
दीक्षा-योग्य मास, नक्षत्र, वार आदि का विचार	१५४-१५७
यागधाम (यज्ञशाला=मण्डप) की निर्माणविधि	१५७-१५९
वेदिका का विस्तार और लक्षण	१५९-१६१
चतुष्कोण आदि विविध कुण्डों का सामान्य लक्षण	१६१-१६३
योनिकुण्ड और अर्धचन्द्र कुण्ड का लक्षण	१६३-१६५
त्रिकोण, वृत्त और षट्कोण कुण्ड का लक्षण	१६५-१६६
पद्म और अष्टकोण कुण्ड का निर्माण	१६६-१६८
इन कुण्डों का काम्य कर्मों में उपयोग	१६६-१६८
सुक् और सुव नामक होमपात्रों का लक्षण	१६८-१७४
विष्टर, परिधि, इष्ट्य और समिधा का लक्षण	१७४-१७६
यागोपयोगी ज्ञानखड्ग आदि उपकरणों और द्रव्यों का संग्रह	१७६-१७८
कर्तरी, सप्तविध विकिर एवं पाशसूत्र	१७८
कुम्भ (कलश) की शिवदेह के रूप में भावना	१७८-१७९
वेदी के निर्माण के लिये चतुरस्र क्षेत्र का विस्तार-क्रम	१७९-१८१
पश्चमण्डल का रचना-क्रम	१८१-१८२
पश्चमण्डल का रंजन-क्रम	१८२-१८३
पश्चपीठ में सत्त्व-रज-तमोमय रेखाओं का विस्तार	१८३-१८४
पीठनिर्माण-विधि एवं पश्चमण्डल का विस्तार	१८४-१८५
लतालिंग मण्डल के पद्म का लक्षण	१८५-१८७
लतालिंग मण्डल की रचना का दूसरा प्रकार	१८७-१८८
मत्तंगागम-वर्णित नवनाभ मण्डल का स्वरूप	१८८-१८९
स्वाध्यायगम वर्णित अनन्तविजय मण्डल का स्वरूप	१८९-१९२
यद्गाह्वरी संहिता वर्णित भद्रमण्डल का स्वरूप	१९२-१९३

किरणागम वर्णित पुराकार मण्डल का स्वरूप	१९३-१९५
भृगेन्द्रागम वर्णित पुराकार मण्डल का स्वरूप	१९५-१९७
गौरीलताकार लिंग नामक मण्डल का स्वरूप	१९७-१९९
सुभद्र नामक मण्डल का स्वरूप	१९९
उमाकान्त नामक मण्डल का स्वरूप	१९९-२००
स्वस्तिक नामक मण्डल का स्वरूप	२००-२०१
चण्डेश्वर का टंक नामक अर्धचन्द्राकार मण्डल	२०१-२०२
समयी दीक्षा का विस्तार से वर्णन, शिष्य के इकतीस संस्कार	२०२-२१५
मण्डल-रचना के बाद विधीयमान कृत्य	२०३-२०४
गुरु द्वारा शिष्य का मण्डल में आवाहन	२०४
शिष्य की दीक्षा-संस्कार विधि	२०४-२०५
अक्षिबन्धन एवं पुष्पपात विधि	२०५-२०६
नामकरण एवं शिवहस्तस्थापन	२०७-२०८
नाडीसन्धान आदि दीक्षा के सात संस्कार	२०८-२१०
विशेष दीक्षा के आवश्यक अंग	२१०-२११
दीक्षणीय व्यक्ति का वागीश्वरी के गर्भ से जन्म	२११-२१२
यज्ञोपवीत धारण	२१२
वागीश्वरी-गर्भ से उत्पन्न जीव के संस्कार	२१२-२१४
पूर्वात्मयोग	२१४
गुरुपूजन एवं समयाचारों का पालन	२१४-२१५
षडध्व-विलापन विधि का विस्तार से वर्णन	२१५-२२७
निवृत्ति कला में स्थित बारह पदार्थ	२१५-२१८
प्रतिष्ठा कला में स्थित बारह पदार्थ	२१८-२१९
विद्या कला में स्थित बारह पदार्थ	२१९-२२१
शान्ति कला में स्थित बारह पदार्थ	२२१-२२३
शान्त्यतीत कला में स्थित बारह पदार्थ	२२३-२२४
षडध्व में परस्पर व्याप्यव्यापकभाव	२२४-२२७
निर्वाण दीक्षा के प्रसंग में पाशसूत्र-विन्यास	२२७-२३०
शिवशक्ति की पाशात्मकता पर विचार	२२९-२३०
वागीश्वरी के गर्भाधान आदि संस्कार एवं पाशच्छेदन	२३०-२३३

छिन्न पाशापिण्ड की शिवाग्रि में आहुति, शुल्कदान एवं पूर्णाहुति	२३३-२३९
शिष्य के लिये आदि अष्टाष्ट मन्त्रों	२३५-२३६
विद्वान्दानेय एवं निषिदाचरण दास की निवृत्ति के लिये शिष्यदान	२३६-२३९
त्रितन्त्र में क्रियालोप आदि दोषों की निवृत्ति के लिये आहुतिविधान	२३९-२४०
अथ मन्त्रिणां शिष्य नामक तीन तन्त्र और शिष्य ज्ञान	२४०
सुक् में षडध्वन्यामपूर्वक शक्ति एवं शिव का आवाहन	२४१-२४३
शुद्धिप्राप्त का यागधर्म के रूप में आवाहन	२४३-२४४
शिष्यप्राप्त के पश्चात् स्थान एवं स्वरूप में षडध्वन्याम	२४४-२४५
पूर्णाहुति के समय सात विषुवों का ध्यान-क्रम	२४४-२४७
पूर्णाहुति-प्रदान की विधि	२४७-२४९
सुक् के आन्तर स्वरूप का ध्यान	२४७-२४८
शिष्य की आत्मा का आप्लावन	२४८-२४९
दीक्षाप्राप्त शिष्य में षडगुण्य का आपादन	२४९-२५०
शिष्य का अभिषेक एवं आचार्यत्वापादन	२५०-२५२
गुरुवर पद का अभिप्रेतार्थ	२५२
बिन्दुतन्त्र से चली शैव कुल-परम्परा एवं मठ-परम्परा	२५३-२५६
मन्त्रार जगन्नाथक जगन् की उत्पत्ति	२५३-२५४
मान गोत्रमा में शैव सम्प्रदाय की प्रवृत्ति	२५४
भारतवर्ष में आमर्दक मठ की स्थापना	२५४
रामभद्र, गान्धकी और पृथ्वीति मठों की परम्परा	२५५
वर्षेश्वर आदि रुषिया की शैवी मठ	२५५-२५६
आमर्दक मठ की परम्परा में ग्रन्थकार की स्थिति	२५६-१५८
मान गोत्रपुरुष एवं आमर्दक आदि मठों के सम्प्रदाय	२५७
ग्रन्थकार की गुरु-परम्परा	२५८

योगपाद

सुषुप्ता आदि समस्त नाडियों के उत्पत्ति-स्थान कन्द का स्वरूप	२५९-२६२
कन्द (शुक्ल) कुण्डलिनियों एवं नाभिस्थान का पञ्चम	२५९-२६१
कन्द में विनमन ७२ हजार नाडियाँ	२६१-२६२
वन्तास मुख्य एवं तीन प्रधान नाडियाँ	२६२

सुषुम्ना के द्विविध मार्ग	२६२
मूलाधार से द्वादशान्त पर्यन्त स्थित विभिन्न कमल	२६२-२६४
आधार आदि दस चक्र एवं ब्रह्मनाडी	२६३
वामा आदि नौ शक्तियाँ एवं रवि-सोम-अग्नि मण्डल	२६४
प्राणायाम से नाडीशुद्धि एवं वायुजय	२६४-२६८
योगाभ्यास के योग्य स्थान, द्विविध आसन एवं शुभ मुहूर्त	२६५-२६६
योगाभ्यास की विधि	२६६
त्रिविध प्राणायाम एवं नाडीशुद्धि	२६६-२६७
मात्रा (ताल) का लक्षण	२६७
निर्गर्भ एवं सगर्भ प्राणायाम एवं उसका फल	२६७-२६८
योगाभ्यास द्वारा द्वादशान्त पदवी में परमशिव का साक्षात्कार	२६८-२६९
योगी के द्वारा हृदयाकाश में ज्योतिर्दर्शन	२६९
चार सन्ध्याओं में शिव का ध्यान-क्रम	२६९-२७१
पंचावस्थातीत आत्मा की परमशिव-साम्प्राप्ति दशा	२७१-२७४
मलिन आत्मा की पाँच अवस्थाएँ	२७२-२७४
निर्मल आत्मा में शिवत्व का उदय	२७४

चर्यापाद

कामिक आदि आगमों का शिवभेद और रुद्रभेद में विभाजन	२७५-२७९
अवबोधरूप एवं शब्दरूप द्विविध शिवज्ञान	२७६
द्विविध गुरु-परम्परा (महोपक्रम एवं गुरुक्रम)	२७७-२७९
शिव के प्रणव आदि दस मानस पुत्र	२७७
दशधा विभक्त नादरूप शिवज्ञान	२७७
कामिक आदि दस शिवागमों के वक्ता एवं श्रोता	२७८
विजय आदि अठारह रुद्रागमों के वक्ता एवं श्रोता	२७८-२७९
वक्ता एवं श्रोता के भेद से शैवागमों का बहुविध अथवा पंचविध संबन्ध	२७९-२८२
महोपक्रम एवं गुरुक्रमविषयक प्रश्नोत्तर	२८१
आगमों का प्रामाण्य	२८१-२८२
दस शिवागमों तथा अठारह रुद्रागमों की नामावली	२८२-२८५
शिव के पाँच मुखों से आगमों का निर्गमन	२८२-२८४

भगवान् शिव की परमाप्तता	२८४-२८५
पवित्रोत्सव कालनिर्णय	२८५-२९२
सौर और चान्द्र मास	२८६-२८८
विष्णुशयन कालनिर्णय	२८८-२९०
भलमास का निर्णय	२९१-२९२
चतुर्विध पवित्रों की तन्तु-ग्रन्थि संख्या एवं उनमें स्थित देवता	२९२-२९९
पवित्र के निर्माण की विधि	२९३-२९४
चतुर्विध पवित्रों का स्वरूप (लक्षण)	२९४-२९५
ग्रन्थियों में देवताओं और कलाओं का विन्यास	२९५-२९९
चतुर्विध पवित्रों का समर्पण-क्रम एवं उससे प्राप्त होने वाला फल	२९९-३०६
पवित्रार्पण की नित्यकर्मगता एवं वार्षिक पवित्रोत्सव	३०२-३०६
भोजन-दोष की निवृत्ति के लिये अष्टविध प्रासाद मन्त्र का द्विविध न्यास	३०६-३१०
भोजनविधि का विस्तार से वर्णन	३०९-३१०
दानग्रहण आदि दोषों के परिहार के लिये प्रासाद मन्त्र का द्विविध न्यास	३१०-३१२
प्रासाद मन्त्र के न्यास की श्रेष्ठता	३१२
[दीक्षित व्यक्ति की अन्त्येष्टि का विधान	३१२-३१८
मण्डप, कुण्ड आदि का निर्माण	३१२-३१४
षष्ठध्वशुद्धि	३१४-३१६
शिवश्राद्धविधि (पंचविध श्राद्ध)	३१६-३१८]
प्रतिष्ठा के पाँच भेदों का स्वरूप	३१८-३२०
पीठ और लिंग के निर्माण की विधि	३१९-३२०
आढ्य आदि चतुर्विध लिंगों का लक्षण	३२०-३२५
चल और अचल लिंग की प्रतिष्ठा	३२२-३२३
लिंग में ब्रह्म-विष्णु-रुद्रांश का प्रमाण	३२३-३२४
चतुर्विध लिंगों का स्वरूप-विस्तार	३२४-३२५
चतुर्विध लिंगों के शिरोभाग का आकार	३२५-३२७
शिरोभाग के आधार पर लिंग की आकृति में भेद	३२६-३२७
आढ्य और सुरेढ्य लिंगों में चिह्नों की संख्या	३२७-३२९

सर्वसम लिंग में मुखों की संख्या	३२९
बाणलिंग का लक्षण एवं उसकी पूजा का फल	३३०-३३३
बाणासुर के द्वारा चतुर्दश कोटि लिंगों की स्थापना	३३०-३३१
बाणलिंग का लक्षण, प्रतिष्ठा एवं प्रमाण	३३१
बाणलिंग की कान्ति, वर्ण आदि के सदृश पीठिका	३३१-३३२
दिक्पालों के द्वारा पूजित बाणलिंग का स्वरूप	३३२-३३३
पूजा के लिये वर्ज्य (निषिद्ध) बाणलिंग	३३३-३३५
गृहस्थ और संन्यासी के लिये उपादेय एवं अनुपादेय बाणलिंग	३३५
चौदह करोड़ बाणलिंगों की विभिन्न प्रदेशों में स्थिति	३३५-३३७
चौसठ पदों के वास्तुक्षेत्र में ५३ देवताओं वाले वास्तुपुरुष का उद्धार	३३७-३४२
वास्तुपद (मण्डल) की निर्माणविधि	३३८-३३९
वास्तुपुरुष की उत्पत्तिकथा	३३९-३४०
वास्तुमण्डप में ५३ देवताओं का विन्यास-क्रम	३४१-३४२
इक्यासी पदों के क्षेत्र में वास्तुपुरुष का उद्धार-क्रम	३४२-३४३
तिरपन देवताओं की नामावली	३४३-३४६
लिंग और पीठ में ध्यातव्य तीन तत्त्व एवं आधार शक्ति	३४६-३४८
तीन तत्त्व, तीन शक्तियाँ और उनके अधिपति	३४७
आधार शक्ति कुण्डलिनी	३४७-३४८
पादशिला का विन्यास-क्रम	३४८-३५२
पादशिला का लक्षण	३४९
नवशिलान्यास, पंचशिलान्यास एवं त्रितत्त्वन्यास	३४९-३५०
कुम्भस्थापन एवं त्रितत्त्व की व्याप्ति	३५०-३५१
पंचमूर्तिन्यास एवं अष्टमूर्तिन्यास	३५१-३५२
लिंग में अंकनीय चिह्नविशेषों का लक्षण	३५२-३५४
रुद्रभाग में चिह्नों का निर्माण	३५३-३५४
पिण्डिका में अंकनीय चिह्नविशेषों का लक्षण	३५४-३५५
पिण्डिका भाग में चिह्नों का निर्माण	३५५
लिंग के तीन कण्ठों में एवं पृथिवी आदि अष्टमूर्तियों में तत्त्व-व्याप्ति	३५५-३५७
पंचमूर्ति पक्ष में त्रिकण्ठ (त्रितत्त्व) न्यास	३५७-३५९
ब्रह्मशिला आदि में त्रिकण्ठ-व्याप्ति	३५९-३६१

पंचमूर्तिन्यास एवं अष्टमूर्तिन्यास	३६०-३६१
हृदय-कुम्भ में स्थित प्रतिमा में तत्त्व-व्याप्ति	३६१-३६४
प्रासाद में चैतन्य का आधान	३६३
शिखर-चूलिका आदि में त्रितत्त्व-व्याप्ति	३६३-३६४
शिवलिंग एवं पीठिका की प्रतिष्ठा से भोग और मोक्ष की प्राप्ति	३६४-३६७
मूर्तियों में शिवशक्ति-न्यास का क्रम	३६७-३७१
लिंग, पीठिका आदि की प्रतिष्ठा का फल	३६८
नौ प्रकार के पीठों की रचना का प्रकार	३६८-३६९
शिवलिंग एवं पीठिका की पूजा (आराधना) का फल	३६९
पूजा के विविध आधार	३६९-३७०
लिंगाराधन की श्रेष्ठता	३७०
छः अंगमन्त्र, पंचब्रह्म मन्त्र एवं प्रासाद मन्त्र	३७०
मनोन्मनी शक्ति (गौरी) एवं भुवनेश्वर	३७०-३७१
ब्रह्मा आदि विभिन्न देवताओं की तत्त्व-व्याप्ति	३७१-३७२
ग्रन्थ और ग्रन्थकार एवं ग्रन्थरचना का प्रयोजन	३७२-३७३

विविध परिशिष्ट

२२४ भुवनामावली	३७५-३७८
८१ पदनामावली	३७९-३८२
९४ पदनामावली	३८२-३८३
सिद्धान्तसारावलि-श्लोकार्थानुक्रमणी	३८४-३८८
उद्धृतग्रन्थ-ग्रन्थकार नामावली	३८९-३९२
विशिष्टविषयानुक्रमणी	३९३-४१४
संकेतसूची	४१५-४१६
व्याख्योद्धृतश्लोकार्थानुक्रमणी	४१७-४५३
सहायक ग्रन्थसूची	४५४-४५९

